मानव जाति की साथ–साथ जीने की बाध्यता

(म्यूनिख में धर्म–सम्प्रदायों एवं संस्कृतियों के बीच एक अविस्मरणीय संवाद)

– डॉ. सोहनलाल गाँधी

गत दशकों में धार्मिक सौहार्द के प्रयास

इतिहास साक्षी है कि विश्व में सर्वाधिक खून–खराबा एवं युद्ध धर्म के नाम पर ही हुए हैं। धर्म एक वैयक्तिक नैतिक आचार संहिता है तथा मानव–जाति के लिए निर्धारित पुरुषार्थ चतुष्टय – अर्थ, काम, धर्म एवं मोक्ष – में सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'पुरुषार्थ' है। मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है, वह तभी प्राप्त हो सकता है जब वह नैतिक आचरण से संचालित होता है और व्यक्ति सत्य और अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करता है। लेकिन जब धर्म केवल सम्प्रदाय का रूप ले लेता है और उसके विचारों को दूसरों पर बलात् थोंपने का प्रयत्न किया जाता है तब धर्म का अर्थ ही बदल जाता है। किसी पदार्थ या विचार के प्रति आसक्ति को भगवान महावीर ने मूर्च्छा कहा है। इस मूर्च्छा के कारण ही मनुष्य सत्य से कोसों दूर हो जाता है तथा हिंसा एवं युद्ध के उन्माद से ग्रस्त हो जाता है।

वर्तमान युग को भौतिकता की पराकाष्ठा कहा जाय जो अतिशयोक्ति नहीं होगी। विज्ञान ने दुनिया के स्वरूप को ही बदल दिया है तथा उसने विश्व में विद्यमान पदार्थों में निहित असीम शक्ति का उजागर कर मानव जीवन को भौतिक दृष्टि से अत्यधिक सुखमय बना दिया है। किंतु इसके साथ ही मनुष्य की यश और धन की लिप्सा अनियंत्रित हो गई है और उसकी ईश्वरीय आस्था भी डगमगा गई है। कुछ लोग अपने अहंकार एवं तृष्णा को संतुष्ट करने के लिए धर्म के विकृत रूप को प्रचारित कर घृणा एवं विद्वेष का वातावरण बना रहे हैं। जहां धर्म का कार्य मनुष्य मनुष्य को जोड़ना एवं उसे साथ–साथ जीना सिखाना होता है, वहीं आज वह आतंक एवं घृणा का साधन बन रहा है। साम्प्रदायिक विद्वेष ही आतंक का मूल कारण है। इस विद्वेष को मिटाने एवं धर्म सम्प्रदायों में पारस्परिक सद्भाव एवं समन्वय स्थापित करने की दृष्टि से जहां आचार्य तुलसी ने सन् 1949 में ही अणुव्रत आन्दोलन का प्रवर्तन किया था, वहीं कुछ इसाई संगठनों ने भी विभिन्न सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों को वैश्विक स्तर पर एक मंच पर लाने के अथक प्रयत्न किये हैं। पांचवें दशक में पेक्स क्रिस्टी के माध्यम से भी धर्म–सम्प्रदायों में पारस्परिक सद्भाव एवं एकता का प्रयास किया गया। उन्हीं दिनों भारत में आचार्य तुलसी एवं उनके दार्शनिक शिष्य मुनि नथमल (बाद में आचार्य

महाप्रज्ञ) दूर–दूर तक गांवों एवं शहरों की पदयात्रा कर अणुव्रत की अलख जगा रहे थे। तदनंतर आठवें एवं नवें दशक में धर्म सम्प्रदायों में पारस्परिक सौहार्द के लिए अनेक देशों में कार्यरत शांतिप्रिय धर्माचार्यों ने पहल की। इन्हीं पहलों में ऐसी ही एक महत्वपूर्ण पहल शांति के मसीहा एवं केथोलिक इसाई सम्प्रदाय के बारहवीं शताब्दी के अनन्य संत फ्रांसिस, जो पशु पक्षियों के प्रति करूणा के लिए विख्यात थे, के जन्म स्थान असिसि में सन् 1986 में एक अन्य गरीबों के मसीहा संत एगिडिओ की स्मृति में बनी संस्था कम्यूनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ के तत्वावधान में परम पावन पोव जॉन पाल द्वितीय द्वारा की गई थी। उन्होंने विश्व के धार्मिक नेताओं से पारस्परिक संवाद और सौहार्द की अपील की।

असिसि से प्रारम्भ यह अभियान इस संस्था की एक अविरल वार्षिक प्रवृत्ति बन गई जो अलग–अलग देशों में स्थानीय कम्यूनिटी ऑफ सेंट एगिडिओ की इकाई के सहयोग से आयोजित होती रही। इस प्रवृत्ति का नामकरण था इंटरनेशनल मीटिंग फॉर पीस (अंतर्राष्ट्रीय शांति सम्मेलन)। इसका 25वां अधिवेशन जर्मन के प्रसिद्ध शहर म्यूनिख में 11 सितम्बर से 13 सितम्बर 2011 को सम्पन्न हुआ जिसमें मुझे आयोजकों ने दो अलग–अलग पेनल (वार्ताकार मंडलों) में पत्र–वाचन के लिए आमंत्रित किया था। इसके पहले मैं इस संस्था द्वारा हेनोवर, आकन, निकोसिया (साइप्रस) और क्रेकोव आदि शहरों में आयोजित सम्मेलनों में पत्र–वाचन कर चुका था। इस संस्था के उद्देश्यों, इसके कार्यकर्ताओं की प्रतिबद्धता तथा उसकी आत्मीय मेजबानी ने मेरे हृदय पर गहरा प्रभाव डाला।

इस संस्था के संस्थापक अध्यक्ष प्रोफेसर रेकार्डो तथा सम्मेलन के संयोजक प्रो0 क्वाट्रोची हैं जिन्होंने विभिन्न सामयिक विषयों पर सार्थक परिचर्चाओं के ढेर सारे सफल आयोजन कर अपनी अद्वितीय संगठानात्मक क्षमता का परिचय दिया है।

संत कोर्बिनिअन के प्रदेश में

म्यूनिख और उसके आसपास का क्षेत्र जिसे फ्रेसिंग कहते है, संत कोर्बिनिअन के प्रदेश के रूप में जाना जाता है। आठवीं सदी के इस संत के अलौकिक जीवन के बारे में अनेक किंवदंतियां हैं। उनके जीवन–चरित में हमें ऐसी ही एक घटना का उल्लेख मिलता है। एक बार जब कोर्बिनिअन अपने घोड़े पर बैठकर जा रहे थे तो मार्ग में एक भालू ने आक्रमण कर दिया तथा उनके घोड़े को बुरी तरह घायल कर दिया। संत कोर्बिनिअन ने बिना चिंतन किये हुए अपना सारा सामान भालू पर लाद दिया और कहा जाता है कि भालू ने उनकी आज्ञा का पालन करते हुए रोम तक की यात्रा में सहभागिता की। जिस क्षेत्र में संत कोर्बिनिअन ने धर्म प्रचार किया, उसे केथोलिक परम्परा में डाइओसिज कहा जाता है। म्यूनिख और फ्रेसिंग का यह सारा प्रदेश आर्क

डाइओसिज के नाम से जाना जाता है। सारा म्यूनिख शहर और फ्रेसिंग साम्प्रदायिक सौहार्द से ओतप्रोत है। सभी धर्म परम्पराओं के लोग मिलजुलकर प्रेम और भाईचारे के वातावरण में रहते हैं। इसीलिए कम्यूनिटी ऑफ सेंट इगिडिओ द्वारा बार्सेलोना में आयोजित 24वें अंतर्राष्ट्रीय शांति सम्मेलन में 25वें सम्मेलन के लिए म्यूनिख चुना गया। यह वही म्यूनिख है जहां ओलम्पिक खेल आयोजित किये गये थे और इजराइली खिलाड़ियों की फिलिस्तिन आतंकवादियों द्वारा निर्मम हत्या की गई।

वर्तमान पोप बेनेडिक्ट सोलह ने, जो इसी क्षेत्र के निवासी रहे थे, अपने ग्रह प्रदेश की 2006 में यात्रा की थी। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए मैं और अणुविभा के उपाध्यक्ष तथा गुलाब कौशल्या चेरिटेबल ट्रस्ट के प्रबन्ध न्यासी नरेश मेहता जेट एयरवेज से ब्रुसेल्स होते हुए 10 सितम्बर को अपरान्ह म्यूनिख पहुंचे। हवाई अड्डे पर कम्यूनिटी ऑफ सेंट इगिडिओ के स्वयंसेवक हमारा स्वागत करने के लिए हमारे नामों की पट्टिकाएं लेकर खड़े थे। हमारे चार दिवसीय प्रवास का प्रबन्ध शहर की सम्मेलन स्थान से कुछ ही दूर स्थित एक होटल में किया गया। वहां कुछ अन्य देशों से आये प्रतिनिधि भी ठहरे हुए थे। शहर में जब हमने प्रतिनिधियों को बैज लगाए घूमते हुए देखा तो लगा जैसे इस शहर में विशेष उत्सव हो रहा हो। सच पूछें तो यह धार्मिक सौहार्द का अपूर्व उत्सव था। सम्मेलन की व्यवस्था कुशल प्रबन्धकों के हाथ में थी। प्रत्येक चार अतिथियों के मार्गदर्शन एवं सहायता के लिए एक स्वयंसेवक नियुक्त था जो हमें निर्धारित प्रवृत्ति के स्थान पर लाने–ले जाने के लिए सतत जागरूक रहता। प्रथम दिन अगले तीन दिनों में होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी तथा अन्य प्रतिनिधियों से सम्पर्क करने एवं परिचय प्राप्त करने में व्यतीत हुआ। करीब 120 देशों से 1500 से भी अधिक प्रतिनिधि उपस्थित थे। वे बौद्ध, जैन, हिंदू, इसाई, मुस्लिम, पारसी, यहूदी और अफ्रीकी देशों के कई अन्य छोटे–छोटे धर्म सम्प्रदायों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। एक ही हाल में विभिन्न धर्म सम्प्रदायों के प्रतिनिधियों का अपनी–अपनी परम्परागत पोशाकों में एक साथ बैठकर भोजन करने का मनोरम दृश्य 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना को चरितार्थ कर रहा था। इन प्रतिनिधियों में से कुछ ही प्रतिनिधि अलग–अलग पेनल्स में वक्ता के रूप में आमंत्रित थे जबकि अन्य सम्मेलन के सक्रिय सहभागी थे जो विभिन्न पेनल्स में प्रस्तुतियों के बाद होने वाली चर्चाओं में भाग ले सकते थे। इस सम्मेलन में भारत से भी कुछ विद्वान् तथा सर्वधर्म सद्भाव अभियानों से जुड़े लोग भाग लेने पहुंचे थे, उनमें नरेश मेहता के अतिरिक्त दिल्ली के विकास अध्ययन केन्द्र के भूतपूर्व निदेशक प्रोफेसर श्रीवास्तव तथा पाण्डरंग शास्त्री के अभियान से जुड़ी दीदी तथा उनके सहयोगी भी थे। शाम को म्यूनिख के महापौर की ओर से भव्य स्वागत का आयोजन किया गया।

सम्मेलन में विचारणीय प्रतिपाद्य (विषय वस्तु)

सम्मेलन में आयोजक प्रतिवर्ष चर्चा के लिए ऐसी थीम (विषय वस्तु) चुनते हैं जिसमें वर्तमान समय की समस्या परिलक्षित होती हो। इस सम्मेलन का प्रतिपाद्य था **'साथ–साथ जीने के लिए बाध्य : धर्म–सम्प्रदायों एवं संस्कृतियों में संवाद'** विषय पर सामयिक था और इसमें वर्तमान की पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी की समस्या की ओर संकेत था। आज की सबसे बड़ी समस्या शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व की है। आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ के जीवन शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व के सूत्रों की खोज में व्यतीत हुए। उन्होंने एक त्रि–आयामी कार्यक्रम बनाया जो अणुव्रत–जीवन विज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान के रूप में सबके सामने आया। अणुव्रत का पहला सूत्र मानवीय एकता ही है। आचार्य तुलसी ने कहा, 'सम्प्रदाय अनेक हैं किन्तु धर्म एक है, सम्प्रदाय धर्म का साधन बन सकता है किन्तु साध्य नहीं। अलग–अलग सम्प्रदाय आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का विकेन्द्रीकरण है। अणुव्रत सब धर्मों के प्रति आदर भाव सिखाता है।'

भगवान महावीर ने 2500 वर्ष पूर्व कहा था, 'परस्परोपग्रहो जीवानाम्' – सभी जीव एक दूसरे के सहयोग पर निर्भर हैं।

इस प्रतिपाद्य पर विचार करने के लिए प्रबुद्ध लोगों के 35 पेनल गठित किये गये। आयोजकों का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को अपने–अपने धर्म सम्प्रदायों के परिप्रेक्ष्य में सामयिक समस्या पर विचार अभिव्यक्त करने का अवसर प्रदान करना था। एक पेनल में कुछ फोरम भी गठित किये गये। अलग–अलग स्थानों पर एक साथ आयोजित बारह पेनल्स में वक्ताओं को विभक्त किया गया ताकि छोटे समूहों में गहन संवाद और परिचर्चा हो सके। पेनल्स के विषय थे – शास्त्रों में न्याय तथा प्रेम, अव्रजन एवं सह–अस्तित्व, धार्मिक स्वतंत्रता – शांति का मार्ग, धर्म और जीवन मूल्य, भूमण्डलीकरण एवं सह–अस्तित्व, मानव पारिस्थितिकी एवं टिकाउपन आदि थे। पांच भाषाओं में साथ–साथ अनुवाद की व्यवस्था थी जिससे श्रोतागण बंधे रहे। बहुत ही सुन्दर, व्यवस्थित एवं सार्थक आयोजन था।

सम्मेलन पर 11 सितम्बर की छाया

यह भी संयोग की ही बात थी कि नाइन इलेवन की त्रासदी को दस वर्ष पूरे हो रहे थे। दुनिया में भय था कि इस अवसर पर आतंकी कुछ नई त्रासदी न कर दे। म्यूनिख सम्मेलन में वे ही लोग थे जो साथ–साथ शांतिपूर्ण जीने के प्रबल समर्थक थे और उसके लिए प्रतिबद्ध भी थे। यह भी एक विडम्बना ही है कि धर्म जो व्यक्ति को भय मुक्त करने की कला सिखाता है, भय का स्रोत बन गया है। हिज एमिनेंस कार्डिनल रेनार्ड मार्क्स की अध्यक्षता में 11 सितम्बर की त्रासदी की स्मृति में एक विशेष प्रार्थना सभा आयोजित की गई। दो घण्टे तक चली इस प्रार्थना सभा में आतंक की

निरंकुशता की छाया में करूणा का झरना बहा। लोग अब धर्म के इस चेहरे से विमुख होना चाहते हैं।

उद्‌घाटन सत्र

सायंकाल 4 बजे सम्मेलन का विधिवत् उद्‌घाटन समारोह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर हाल खचाखच भरा था तथा एक अलौकिक गांभीर्य ने सभी को एक सूत्रता में बांध रखा था। काश, ऐसे सम्मेलन बार–बार आयोजित हों। इस सम्मेलन के आतिथेय थे म्यूनिख और फ्रेसिंग के आर्कबिशप श्रद्धेय रेनहार्ड मार्क्स और वे ही दस सत्र के अध्यक्ष भी थे। छह भाग में दो–तीन वक्ताओं के बाद विशेष संगीत की व्यवस्था भी थी। प्रोफेसर रेनहार्ड ने असिसि से प्रवाहित इस सौहार्द की धारा को दुनिया के कोने–कोने में ले ने जाने का आव्हान किया। सेंट इगिडिओ की जर्मन इकाई के अध्यक्ष उर्सूला कल्व ने सम्मेलन की अध्यक्षता की।

इस सत्र के उद्‌घाटन के लिए जर्मनी के राष्ट्रपति क्रिस्चियन वुल्फ ने विशेष रूप से उपस्थित होकर सम्मेलन के उद्देश्यों का प्रबल समर्थन किया और कहा – जर्मन देश मानवीय एकता में विश्वास करता है। इस अवसर पर गिनि के राष्ट्रपति अल्फा कोंडे तथा स्लोवानिया के राष्ट्रपति डानिलो टर्क के भावपूर्ण वक्तव्य हुए। राष्ट्राध्यक्षों की सर्वधर्म सद्‌भाव सम्मेलन में उपस्थिति से ऐसा लगा कि नया युग प्रारम्भ होने वाला है।

मेरी प्रस्तुति

जैसाकि मैं पहले ही कह चुका हूं कि इस सम्मेलन में आयोजकों ने मुझे एक पेनल और एक फोरम अर्थात दो सत्रों में पत्र वाचन के लिए आमंत्रित किया था। दोनों ही सत्र एक ही दिन – एक चार बजे से छह बजे तक तथा दूसरा सायंकाल सात बजे से नो बजे तक – उस स्थान से 15 किलोमीटर दूर आर्थोडोक्स चर्च में आयोजित होने थे। मेरे पहले पत्र–वाचन का विषय था **जैन धर्म परम्परा में अहिंसा एक शाश्वत मूल्य के रूप में**। इस सत्र के अध्यक्ष थे रोमानिया ग्रीक केथोलिक बिशप श्रद्धेय वर्जिल बर्सिया। मेरे अतिरिक्त धर्म एवं जीवन मूल्य नामक इस सत्र मे ंसुप्रेम शिटे इस्लामिक काफ्रेंस, लेबनान के हनी फह, बेल्जियम के केथोलिक बिशप श्रद्धेय लेओन लेमेन्स, फ्रांस के रब्बी के प्रवक्ता मोइसे लेमेन्स, जर्मनी के लूथरन बिशप जुरजन जोहनेस डोटर तथा साइप्रस चर्च के आर्थोडोक्स मेट्रोपोलिटन वेसीलियस। सभी ने अपने–अपने धर्म सम्प्रदायों के सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में प्रतिपादित मानव मूल्यों की प्रस्तुति की। मैंने अपने पत्र–वाचन में कहा – जैन धर्म में अहिंसा को परर्म धर्म कहा है। जो लोग नैतिक आचरण करते हुए मन, वचन एवं कर्म से हिंसा से विरत रहते हैं, वे इसी जन्म में अर्हत बन कर मोक्ष का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं। अहिंसा ही एकमात्र मूल्य है

जिससे न केवल सभी मानव अपितु अन्य जीव भी सुखपूर्वक जी सकते हैं। पूर्ण अहिंसा अभय एवं आंतरिक रूपांतरण की चरम अवस्था है जो तब ही संभव है जब व्यक्ति वीतरागी अवस्था प्राप्त कर लेता है तथा सांसारिक प्रवृत्तियों से विरत हो जाता है।

भगवान महावीर ने इस लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु मुनियों के लिय पांच महाव्रतों पर आधारित एक आचार संहिता का निर्माण किया जिसमें अहिंसा व्रत प्रमुख हैं। अन्य महाव्रत सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह भी अहिंसा के महाव्रत को सुदृढ़ करने के लिए ही है। सभी मुनि नहीं बन सकते और ग्रहस्थ जीवन से संसार–चक्र चलता रहता है। उन्होंने ग्रहस्थों के लिए बारह अणुव्रत निर्धारित किये जिसमें सर्वप्रथम अहिंसा अणुव्रत है। अहिंसा की पहली सीढ़ी है निर्दोष प्राणी की हत्या न करने का व्रत। अन्य ग्यारह व्रत भी अणुव्रत अहिंसा को सुदृढ़ करने के लिए हैं। केवल अहिंसा अणुव्रत से ही विश्व में शांति स्थापित हो सकती है तथा युद्ध की आशंका हमेशा के लिए समाप्त हो सकती है। मैंने कहा आचार्य महाप्रज्ञ के उत्तराधिकारी वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण अणुव्रत अभियान का संचालन कर रहे हैं। इस प्रस्तुति के बाद प्रश्नोत्तर का रोचक कार्यक्रम रहा।

इस सत्र के ठीक एक घण्टे बाद दूसरा सत्र निर्धारित था और हमारे समूह के लिए नियुक्त स्वयंसेवक ऐरिका ने सारी व्यवस्था कर रखी थी। वही मुझे एवं श्री नरेश मेहता को **मानव पारिस्थितिकी एवं टिकाउपन (सस्टेनिबिलिटी)** पर चर्चा के लिए विशेष फोरम में प्रस्तुति देने के लिए ले गई आर्थोडोक्स चर्च। यह एक भव्य चर्च है जहां जीसस क्राइस्ट के सिद्धान्तों का कठोरता से पालन होता है। उसी के परिसर में ग्रीक आर्थोडोक्स पेरिश ऑफ आल सेंट्स ने इस सत्र की मेजबानी की। सत्र की अध्यक्षता आर्थोडोक्स मेट्रोपोलिटन एक्यूमेनिकल पेट्रीआर्क आगस्टिनोस ने की। मेरे अलावा तीन अन्य वक्ता जर्मनी के कौंसिल ऑफ चर्चेज की एलिजाबेथ डीकमन, फिनलेण्ड के लूथरन बिशप तथा स्कोन्टाफ फादर्स इंस्टीट्यूट के सुपीरियर जनरल हेनरिक वाल्टर थे। मैंने विषय पर विचार व्यक्त करते हुए कहा, ‘जैन धर्म ही दुनिया का अकेला पारिस्थितिकी मित्र धर्म है जो न केवल मानव–मानव के पारस्परिक सम्बन्धों को आत्म संयम एवं अहिंसा से अनुशासित करने का उपदेश देता है अपितु मनुष्य का पृथ्वी पर विद्यमान अन्य जीवों के साथ भी करूणमय व्यवहार पर बल देकर पारिस्थितिकी संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है। केवल मनुष्य ही नहीं अपितु इस पृथ्वी पर विद्यमान सभी अन्य प्राणी भी साथ–साथ फले–फूले यही जैन धर्म का पारिस्थितिकी संतुलन का नीति शास्त्र है।’

डकाउ यहूदी संहार शिविर में विशेष स्मृति सभा

बीसवीं सदी के चौथे दशक में जर्मन के शासक चान्सलर हिटलर इतिहास के क्रूरतम व्यक्ति के रूप में जाना जाता है। उसने अनेक शिविरों में यहूदियों को बंदी बनाकर रखा तथा लाखों यहूदियों का केवल इसीलिए संहार करवाया कि वे जर्मन जाति से अलग थे और उसका विश्वास था कि केवल जर्मन जाति के लोगों को ही विश्व पर शासन करने का अधिकार है। मित्र राष्ट्रों ने यूरोप में नाजी आतंकवाद को समाप्त किया और उसके साथ ही बचे हुए यहूदी स्वतंत्र हुए।

डकाउ में एक विशेष स्मृति सभा का आयोजित किया गया जिसमें करीब 700 प्रतिनिधिगण विशेष बसों द्वारा डकाउ पहुंचे। अब सारा स्थल एक स्मारक के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। सर्वप्रथम मैं और नरेश मेहता संग्रहालय देखने गये। नाजियों के बर्बर अत्याचार के दृश्यों से हृदय विव्हल हो उठा। स्मृति सभा में उस यातना शिविर से बच निकले एक यहूदी ने अपनी दर्दनाक कहानी सुनाकर सभी के आंखों में आंसू भर दिये।

जैन प्रार्थना एवं समापन समारोह

इस शांति सम्मेलन की एक विशेषता यह थी कि सभी धर्म सम्प्रदायों की अलग–अलग स्थानों पर अपने–अपने धर्मों की मर्यादाओं के अनुसार प्रार्थनाएं आयोजित करना। प्रत्येक धर्म में प्रार्थना का बहुत महत्व है। सम्मेलन के आयोजक चाहते थे कि प्रतिनिधिगण भिन्न प्रार्थनाओं की मूल भावना एवं उनके स्वरूप को समझे।

मैंने एवं श्री नरेश मेहता ने जैन प्रार्थना का संचालन किया। मैंने कहा, 'जैन धर्म में प्रार्थना नहीं की जाती क्योंकि उसमें व्यक्ति ईश्वर से भौतिक इच्छा की पूर्ति की कामना करता है। प्रार्थना की बजाय हम अरिहंतों एवं सिद्धों के गुणों की स्तुति करते हैं। जैन धर्म में नवकार महामंत्र का विशेष महत्व है जिसमें पांच श्रेणी में विभाजित उत्कृष्ट आत्माओं की वंदना है। जैनों का विश्वास है कि इस निष्काम वंदना से ही सभी दु:खों का अंत हो जाता है।' मैंने उपस्थित बंधुओं को विस्तार से नमस्कार महामंत्र का महत्व बताया तो वे यह जानकर स्तब्ध थे कि इस मंत्र में किसी भी तीर्थंकर का नामोलेख नहीं है। जैन धर्म में प्रार्थना के इस सम्प्रदाय निरपेक्ष स्वरूप को जानकर सभी प्रसन्न हुए।

सायंकाल छह बजे समापन समारोह का भव्य आयोजन हुआ। इसके पूर्व सभी धर्मों के मुख्य प्रतिनिधि प्रार्थना स्थलों से सीधे शांति जलूस के रूप में समापन समारोह में पहुंचे। यह अनुपम दृश्य अपूर्व एवं आकर्षक था। धार्मिक एकता के ऐसे दृश्य विरले ही देखने को मिलते हैं। समापन समारोह भी गरिमापूर्ण था। सभी प्रतिनिधियों को

निर्धारित स्थानों पर ही बिठाया गया। एक–एक कर विभिन्न प्रतिनिधिमण्डलों के नेताओं ने दीप प्रज्वलन में सहभागिता की। म्यूनिख के आर्कबिशप रेनहार्ड मार्क्स कार्डिनल ने सभा को सम्बोधित करते हुए कहा – शांति के ये दीप बुझ न पाये, हमें सावधान रहना है। उन्होंने यह भी घोषणा की कि अगला अधिवेशन बोस्निया की राजधानी सरायेऊ में होगा।

इस घोषणा के साथ ही म्यूनिख का यह त्रिदिवसीय शांति सम्मेलन समाप्त हो गया। इस समारोह को देखने के लिए म्यूनिख के दस हजार से भी अधिक लोग उपस्थित थे जिन्होंने ताली बजाकर प्रतिनिधियों का अभिनंदन किया। म्यूनिख के इस त्रिदिवसीय सम्मेलन की अविस्मरणीय स्मृतियां हमारे मस्तिष्क में सदा के लिए अंकित हो गई। 24 घण्टों की थका देने वाली यात्रा के बाद हम दोनों पुनः जयपुर पहुंचे। मुझे वाल्टर स्कोट की यह कविता याद आ गई जिसमें उन्होंने लिखा – क्या दुनिया में कोई ऐसा व्यक्ति है जो अपने देश लौटकर प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव नहीं करता? पुनः जयपुर पहुंचने पर अत्यधिक प्रसन्नता एवं हर्ष की अनुभूति से थकान स्वतः समाप्त हो गई।